मेरे
दिल
से
काव्य संग्रह
सुनीता महेंद्रू

सम्पादकीय

कवि की भावनाओं का प्रतिबिम्ब या कहा जाये कि विचारों की अभिव्यक्ति ही ‘ काव्य ‘ है ।

कोई कल्पना भाव या विचार मष्तिक के किसी कोने से कागज पर उतरता है तो वास्तव में वह अपने आसपास के जीवन , प्रेम –विरह , प्रकृति सुन्दरता , दिली भावनाओं , को ही चित्रित करता है ।

मित्रों हम सभी के लिए ये एक हर्ष की बात है कि हमारी website साहित्यकारों रचनाकारों के विकास और सम्मान के लिए प्रतिबद्ध है । इसी दिशा में सभी नए और पुराने रचनाकारों की रचनाएँ प्रतिदिन website पर प्रकाशित कर उनकी भावनाओं को साहित्य प्रेमी पाठकों तक पहुचाया जाता है।

साहित्य साधना की दिशा में एक और कदम बढ़ाते हुए www.kavyasagar.com साहित्यकारों के संग्रह प्रकाशन को न्यूनतम लगत मात्र में E book का प्रकाशन अपनी वेबसाइट पर करने का निर्णय लिया है ।

इसी क्रम में website पर कहानी संग्रह , काव्य संग्रह , ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित किया जाना प्रस्तावित है। रचानाकरारों और पाठकों का सहयोग सादर अपेक्षित है ।

प्रबन्ध समिति ,

www.kavyasagar.com

सुनीता महेन्द्रू ('मेरे दिल से')

अपने काव्य संग्रह 'मेरे दिल से' मैंने अपनी आवाज़ जन-जन तक पहुँचाने की कोशिश की है। इस साहित्यिक परियोजना में मैं बताना चाहती हूँ कि शब्द किसी के मोहताज नहीं है, वे आपकी अपनी पहचानहैं। मैं कविता लिखते समय बहुत भावुक हो जाती हूँ और मेरा मानना है कि शब्दों और भावनाओं को साथ रखा जाये तो हम अपनी बात आसानी से कह सकते हैं।कविता किसी की मोहताज़ नहीं होती है, उनका संबंध हमारी सोच पर निर्भर है । गुलाबी नगर में जन्मी मैं (सुनीता) ने कभी नहीं सोचा था कि मैं लेखन की दुनिया में कदम रखूँगी, वक्त बीतता गया, कब और कैसे मैंने कलम को थामा मैं स्वंय नहीं जानती। पिछले 11 साल से बैंकाक के इंटरनेशनल पायोनियर स्कूल में हिंदी पढ़ा रही हूँ ,अध्यापन के दौरान मुझे लगा कि लेखन के माध्यम से मैं अपनी भावनाओं को दुनिया तक पहुँचा सकती हूँ। समय गुजरता गया और मुझे माता-पिता, मित्रों और अपने सहयोगियों का सहयोग मिला और जल्द ही अपने लक्ष्य साधने के लिए ताकत मिल गई। मेरा यह काव्य संग्रह समर्पित है मेरे माता- पिता, ताऊजी और मेरे हमसफर संजय को जिन्होंने हर कदम पर मुझे प्रेरित किया। विशेष धन्यवाद मेरी अज़ीज़ कवियत्री नीलू 'नीलपरी' जो मेरी प्रेरणास्रोत बनी और मेरी सहयोगी शिल्पा को जिन्होंने मुझे हमेशा अपने दिल से लिखने के लिए प्रोत्साहित किया।

अनंत शुभकामनायें

सुनीता महेंद्रू जी को आज से नहीं अपने बचपन से जानती हूँ। सुनीता जी एक बेहद सरल और संवेदनशील इंसान हैं और इनकी निजी जीवन की यह कोमलता उनकी कविताओं में भी बरसती है। वे जीवन के विभिन्न पहलुओं, प्रेम और रिश्तों के स्पर्श और उसकी अनुभूतियों को शब्द देने वाली सशक्त लेखनी की मल्लिका हैं। मेरी बहुत बहुत शुभकामनाएं हैं। आप ऐसे ही सुन्दर, सार्थक लिखती रहें, नित नयी ऊँचाईयों को छूती रहें ! माँ शारदे की आप पर सदैव कृपा दृष्टि बनी रहे! शुभं अस्तु!

- नीलू 'नीलपरी'
(व्याख्याता, मनोवैज्ञानिक, लेखिका, कवयित्री, संपादिका)
नई दिल्ली, भारत

शुभकामनायें

सुनीता महेन्द्रू जी को उनके काव्य संग्रह ‘ मेरे दिल से ‘ के लिए मेरे और kavysagar परिवार की ओर से हार्दिक शुभ कामनायें ।

प्रताप सिंह नेगी

अटूटरिश्ता

जन्म लेते ही जुड़ जाते है सब रिश्तों के अनमोल धागोंमें,
बनते है रिश्तेमाँ- बाप, भाई-बहनोंऔर दोस्तों से,
कुदरत ने बनायाएक ऐसाअटूट पवित्ररिश्ता ,
नाम दिया जिसे पति-पत्नी का।

अंजान होकर भीदोनों एक-दूसरेसे,
वादा करते है जन्मों तक साथ निभाने का,
कुदरत ने ही तोबनायाइसअटूट पवित्ररिश्तेको ,
नाम दिया जिसे पति-पत्नी का।

नोंक-झोंकहोना, जिदकरना,झगड़ा और अहमतो है यह मामूली शब्द इस रिश्ते में,
परिपक्व होता जाता है यह रिश्ता समय के साथ- साथ,
बीतते समय के साथ एकजीवता,तृप्तता धीरे-धीरे आ जाती है रिश्तों में,
कुदरत ने ही तोबनायाइसअटूट पवित्ररिश्तेको ,
नाम दिया जिसे पति-पत्नी का।

उम्र के साथ दोनों एक-दूसरे पर होजाते है आश्रित,
खुद के अस्तित्व को भूलाकर जीते है एक-दूसरेके लिए,
कुदरत ने ही तोबनायाइसअटूट पवित्ररिश्तेको ,
नाम दिया जिसे पति-पत्नी का।

अपनों को खोने का डर, अपनोंके बीच किसी के आनेका डर,
अपनोंके बीचआ रही कड़वाहट का डर,
पर विष को अमृत में बदल देता यहरिश्ता ,वक्त के साथ बढ़ता है रुझानएक-दूसरेके लिए,
कुदरत ने ही तोबनायाइसअटूटरिश्तेको ।

अभी भी है वक्त तेरे पास

वे बुलंदियाँ किस काम की, जब इंसानियत के लिए नहीं बचा है तेरे पास वक्त,
भरी हुई है तिज़ोरी हीरे-जवाहरतो से, पर चैन से सोने के लिए नहीं है तेरे पास वक्त,

खुशियों से भरा हुआ दामन तेरा, पर नहीं है तेरे पास वक्त हँसने का,
दिन-रात करता है मेहनत एक रोटी के लिये, पर वक्त कहाँ है तेरे पासउसे खाने का,

दिल में दफन है हज़ारों सवाल ,पर उनके ज़वाब ढूँढने का वक्त नहीं तेरे पास,
ख्वाब तो बहुत संजोए हुए है दिल में, पर टूटते ख्वाबों को पूरा करने का वक्त नहीं तेरे पास,

माँ-बाप तरस रहे तेरी एक झलक के लिए, पर कहाँ हैं वक्त तेरे पास उनके लिए,
गैरों की फिक्र है तुझे, पर अपनों के दर्द का एहसास नहीं तुझे ,नहीं वक्त तेरे पास उनके लिए,

जन्म देकर भूल गए अपने ही अंश को, उसके लिए वक्त नहीं है तुम्हारे पास,
दौलत की है भरमार, पर किसी बेसहारा को देने के लिये नहीं तुम्हारे पास,

दूसरों की जिंदगी में डालता है दखल, अपनी जिंदगी सुधारने के लिए तेरे पास वक्त नहीं,
ज़ख्म देने तो है आसान, पर उन्हें भरने का तेरे पास वक्त नहीं,
जिंदगी है हमारी शंतरज की तरह, वक्त की जिसने नहीं की कद्र उस पर भारी पड़ जाती है चाल,
संभल ले **अभी भी है वक्ततेरे पास** ॥

आइना बोल उठा

देख मुझे आज आइना भी बोल उठा,
क्यों मुझ से नज़रे छिपता है तू ,एक बार देख मेरी ओर,
तेरे हर पलों को करता हूँ मैं कैद॥
खो गई है तेरी हंसी कहीं,
घिरता जा रहा तू आलोचनाओं से, नहीं हो रहा है मूल्यांकन तेरे काम का,
दिखती है सिर्फ खामियाँ तुझ में, नज़रअंदाज हो रही है तेरी खूबियाँ॥
मोक्ष ही अंत नहीं जीवन का,
फिर क्यों दूर हो रहा तू अपने आपसे,
कब तक जीएगा दूसरों के लिए॥
ढलती जा रही है तेरी उम्र नहीं है तुझे उसका भी अफ़सोस,
फिर भी तू तरसता है दूसरों के लिए,
मांगता है दुआएं उनके लिए तू॥
याद कर तू अपनी उपलब्धियों को, जो देख रही है तेरी राह,
देख मेरी तरफ पहचान हकीकत को,
देख मुझे आज आइना भी बोल उठा,

आखिर क्यों ?

क्यों भूलता जा रहा तू इन्सानियत को,
घेर लिया है तूने अपने आप को हैवानियत से ।
क्यों नहीं सोचता है तू किसी के दर्दको,
तुझे तो ना किसी ने दिया था दर्द देने का हक ।
क्यों कर रहा है तू विश्वास इन बनावटी लोगों पर,
'चार दिन की चाँदनी' कब तक देगी उनका साथ ।
क्यों आस्था रखता है उन मक्कारों पर,
आस्था रखनी है तो रख खुदा पर।
क्यों बात करता है देश भक्ति की,
कर सकता है तो कुछ कर दिखा उन शहीदों के लिए ।
क्यों रखता है तू उम्मीद गैरों से,
आँसुओं के इलावा क्या मिला है तुझे उनसे।
क्यों ज़ुल्म उठा रहा है मासूमों पर,
देख उस माँ की ओर , तड़पता है उसका दिल अपनी संतान के लिए,
क्यों नही देता तू इज्ज़त अपनी माँ – बहनों को,
उनकी उंगली पकड़ कर ही सीखा तूने चलना।
क्यों फ़र्क रखते बेटा – बेटी में,
बेटियाँ तो है हमारे उज्जल भविष्य की पहचान।

कौन है अमीर ? कौन है गरीब ?

देखो, उस इन्सान की ओर, कहने को तो है उसके पास सब सुख- सुविधाएं,
गाड़ी वो भी वातानुकूलित वोल्वो, क्या नहीं है उसमें,
बंगला क्या अलीशान, दिखते है जिसमे सिर्फ नौकर – चाकर,
मोबाइल उसका तो क्या कहना आई-फोन S E,कर लेता है हर लम्हे को कैद
अरे !उसकी घड़ी भी है जड़ी हुई है हीरे- जवाहरतों से।
उसके हर लब्ज़ से आती है, पैसों की महक,
तौलता है हर खुशी को वह अमीरी के तराजू पर,
पर यह क्या, नहीं है उसके चेहरे पर कोई हंसी,
भरी महफिल में भी है अकेला, घिरा हुआ है स्वार्थी लोगों से।
अब, देखो उस इन्सान की ओर, कहने को क्या है उसके पास ,
तपती धूप में तोड़ता है पत्थर,
नहीं हैं उसके पास कोई गाड़ी, घड़ी तो शायद कभी देखी भी ना हो,
पेड़ की छाया में ही है उसका रैन-बसेरा,
घिरा हुआ है लोगों से, है जो उसके सुख-दुख के साथी,
आँखों में सजाए बैठा है हज़ारों सपने, कुछ कर दिखाने के,
पता है उसे राज़ जीने का
नहीं तौलता है वह अपने आँसूओं को भी तराजूमें,
अमीर तो यह इन्सान है, दिल इसका बड़ा, सोच इसकी महलों से ऊँची,
पैसों से नहीं भरी है उसकी जेब तो क्या,
चारों ओर बहुत है उसप रमोहबत्त बरसाने वाले।
अब तू खुद ही सोच ले,
कौन है अमीर?कौन है गरीब ?

कौनहैश्रेष्ठ....

शहर की चकाचौंध से जकड़ चुके है हम,
भाग रहे है हम बनावटी दुनिया के पीछे,
बेहतर जीवन शैली पाने की जिज्ञासा, कर रही है हमें अपनी ही जड़ो से दूर
कर रहा है हर कोई पलायन ,शहर की ओर,

पर क्यों?

ढकी हुई है धरती माँ हरित परिधान से,
गोबर से लिपे घर , वह धूल , झलकता है जिसमें अपनापन,
बन चुके हैं घर धर्मशाला , मिटता जा रहा है घरों का अस्तित्व शहरों में।

कौन है श्रेष्ठ .... गाँव या शहर

पक्षियों की कलरव, छू लेतीसबकेदिलों को,
सादा जीवन व उच्च विचार की सच्ची मूरत दिखती है गाँव वासियों में,
तनावों से घिरे हुए है, फंसते जा रहे मादक द्रव्यों के बीच शहरी।

कौन है श्रेष्ठ. ... गाँव या शहर

मिल कर खलिहानों में धान कटाना , दीप अनंत त्यौहार मानना,
चौपाल पर बैठ बाँटते अपना दुख दर्द,कण-कण में बिखरा है अपनापन,
अपने ही बच्चे के लालन – पालन के लिये नही है वक्त **शहरों में**।

कौन है श्रेष्ठ .... गाँव या शहर

भरी दुपहरी में निस्वार्थ करता है मेहनत,
सूखी रोटी खा कर भी है तू खुश,नहीं है चाह छपपन पकवानों की,
अनगिनत सुख है, पर अभाव है आपसी सामंजस्य का शहरों में।

तुम ही बताओ,

कौन है श्रेष्ठ .... गाँव या शहर ?

क्या यही प्यार है?

क्या यही प्यार है?
अनजान थे हम एक दूसरे से, हुई मुलाकत हमारी,
मिल गए दिल हमारे, हो गया प्यार,
बंध गए पवित्रबंधनकेरिश्तेमें॥
क्या यही प्यार है?
शुरुवात हुई नए सफर की,
छोटी-छोटी बातों पर करतेनोक-झोंक,
कभी रूठजानातो कभी घंटों तक मनातेरहना॥
क्या यही प्यार है?
बनकर आए तुम मेरी जिंदगी में मेरे हम सफर,
क्या बताऊँ कितने अज़ीज हो तुम,
छू जाती तेरी हर बात दिल को॥
क्या यही प्यार है?
मेरे ख्वाबों की हक़ीक़त हो तुम,
मेरी मुस्कान की वजह हो तुम,
तेरा होने का एहसास,कह जाता बहुत कुछ॥
क्या यही प्यार है?
इस रिश्ते की नींव है विश्वास औ रप्रेम,
जिंदगी है यह छोटी-सी,
बस गुजारिश है खुदा से बना रहे साथ हमारा॥
क्या यही प्यार है?
हाँ,यही तो है प्यार,
यही तो है प्यार॥

खुदा बड़ा या भगवान

हे प्राणी ! तू क्यों कर रहा है इबादत में फ़र्क,
सदियों से तो मिलकर कर रहे थे हम इबादत।
क्यों आ गई आज दीवारें मज़हब के बीच,
अरे निर्बोध ! तू भी बन्दा है, उसी खुदा और भगवान का।

त्याग,तप और मध्यम मार्ग की संयममयी भावना विद्यामन सभी धर्मों में,
फिर क्यों ना बना सकते हम सामंजस्य आपस में।
उसने तो ना कभी रखा फ़र्क किसी में,
खुद खोते हो अपनी पहचान, माँगते हो उससे जवाब ।

जो लाया प्रेम ओर सद्भाव का संदेश,
भक्त- वृंद औरमधुर - कंठ से लेते हो उसका नाम,
फिर बुद्धिजीवी क्यों लड़ते हो सहिष्णुता और असहिष्णुता को लेकर,
कुछ करना है तो सांस्कृतिकएकता के सूत्रधार बनो।

युगो तक तो न, कोई धर्म संप्रदाय की श्रेष्ठता पर सवाल उठा,
न किसी ने पूछा कि खुदा बड़ा या भगवान,
दूरियों को नजदकियों में बदल डालो,
मत उठाओ प्रश्न मज़हब पर, मत करइबादत में फ़र्क।

तेरे बोल

तेरी पहचान है तेरे बोल,
मत कर तू उस पर अंहकार,
किसी ने कहाहै ,'जुबां शीरीं मुल्क मीरी'
मीठी वाणी इन्सान को बनाता बादशाह,
वही कड़वा बोल उसे बना देता है फकीर॥

तेरी पहचान है तेरे बोल,
मत बोल तू कड़वा,
निकला हुआ तेरा एक कटु शब्द दे देता है घाव,
मित्र होते हुए भी तू हो जाता है शत्रु तुल्य॥

तेरी पहचान है तेरे बोल,
मत बन खुदगर्ज तू,
हड़काया जाता है कौआ अपनी कर्कश वाणी से,
प्रेम का सौदागर है कोयल अपनी सुरीली आवाज से॥

तेरी पहचान है तेरे बोल,
तेरा एक मीठा बोल दुखी मन को कर देता प्रफुलित्त,
अलभ्य और अद्भूत बोल संवार देते है बिगड़ी बात को,
शब्द तेरी पहचान है उस पर दाग मत लगने दे,

तेरी पहचान है तेरे बोल,
तेरे हर शब्द में छिपा है गूढ़ रहस्य,
तेरा अस्तिव मिट जाएगा,
पर तेरे शब्दों की गूंज सुनाई देती रहेगी सदियों तक,

तेरी पहचान है तेरे बोल॥

नव विवाहित मच्छर की दास्तन

सूर्योदय का आगमन, हरी-हरी दूब पर ओस की बूँदे, सफेद मोतियों जैसी,
चाय की चुस्की और साथ में अखबार, वाह !
यह क्या, सुर्खियों में नव विवाहित मच्छरों का जोड़ा,
अभी दो दिन पहले ही तो हुई थी उनकी शादी,
दिल हो गया बैचन मेरा, तुंरत जा पहुँची मुलाकत करने उनसे।

डरे- सहमे खड़े थे कटघरे में वे नव विवाहि तमच्छरों का जोड़ा ,
क्यों दी जा रही है सज़ा हमें, पूछा मादा मच्छर ने, क्या दोष है हमारा ?
इल्ज़ाम पर इल्ज़ाम लगा रही थी मानव जाति उन पर,
सब्र टूट गया उसका, बौछार कर दी उसने भी प्रश्नोंकी।

सालों तक रियाज करा लोरियाँ गाने का अपने पूर्वजों के साथ,
तुम तो न सीख पाए अपने पूर्वजों की परंपराओं को।
जश्न में चला कर गोलियाँ बहते हो खून बेकसूरों का,
हम तो एक बूंद से ही हो जाते है संतुष्ट।
बनाते हो मस्कीटो स्प्रे, मिटाने के लिये अस्तित्व हमारा,
अरे मूर्ख ! क्यों कर है पर्यावरण को दूषित ।
विज्ञापन में दिखाते हो हमारी डरावनी शक्लें,
तू भी देख ले एक बार आइने में।
मीडिया ने नाम दिया हमे खूंखार आतंकवादी का,
पर गंदी राजनीति पर क्यों नही खोलता तू मुँह अपना।
बढ़ती जनसंख्या पर नहीं रख सकते तुम अंकुश,
तो किसने हक दिया तुम्हें हमारी जान लेने का।
फैल रहे प्रदूषण कोरोकने के लिये खेलतेहो ऑड- ईवनका खेल,
हम तो खेलते होली गंदगी से तुझे बचाने के लिये।

मत करो मजबूर हमें मुँह खोलने पर,
जवाब नही था किसी के पास उसके प्रश्नों का,
धारण कर लिया सबने मौन व्रत,
तभी नन्हा-सा मच्छर बोल उठा 'उलटा चोर को कोतवाल डांटे'।

पंचो की टोली

कहते है हमें पंचो की टोली, क्या गलत है इसमें दोस्तों,
दिन, महीने, सालों बीत गए, पर नही छोड़ा हम पंचो ने साथ एक दूसरे–का,
कुछ खट्टी तो कुछ मीठी यादें, भूला नहीं सकते जिन्हें कभी हम,
समुद्र की लहरें भी ना रोक पाई हमें आगे बढ़ने से।

याद है वह पल, जब मिली थी मैं तुमसे पहली बार,
अनजान थी सबसे,अजनबी चेहरों से घिरी ढूंढ रही थी कोई अपना मिल जाए,
नज़र गई उस अप्सरा पर, बढ़ाया उसने हाथ मेरी ओर दोस्ती का,
कुछ ही पलों में राजस्थान और कोलकता आ गए करीब।

याद है आज भी वह दिन, भारत के लिए था गौरवमय क्षण,
मना रहे थे सब स्वतंत्रता दिवस मिलजुल कर,
है उसकी भूरी आँखे ,गुलाबी चेहरा उसने दे दी दस्तक दिल तक,
दिलवालों के नगरी दिल्ली से आई वह, पलभर में मिल गए दोनों के दिल।

वक्त बीता , एक परी ने रखा कदम वो भी लखनवी अंदाज में,
जिसके हर लब्ज़ में झलकती है तहज़ीब,
उसकी हर अदा पर थे सब पंच फिदा,
सीखा बहुत कुछ उससे, दूरियों को कैसे बदलते है नजदकियों में।

देखा जब उसे पहली बार,अजीब-सी लालिमा थी उसके चेहरे पर,
उसकी नन्ही उंगलियों में था जादू, भरा हुआ था हुनर,
कितनी खूबसूरती से कैद कर लेती थी वह हर लम्हे को वह,
गुजरात से आई वह कली, राज करने लगी सबके दिलों पर।

कहते है हमें पंचो की टोली, क्या गलत है इसमें दोस्तों,
नहीं मिल पाते रोज, पर फिर भी है साथी सुख-दुख के,
बहुमूल्य है यह दोस्ती, गर्व है एक दूसरे पर,
समुद्र की लहरें भी ना रोक पाई हमें आगे बढ़ने से।

परिंदों का शंहशाह

सुनी कहानी बचपन में प्यासे कौए की,अब सुनों मेरी ज़ुबानी॥
काँउ-काँउ की कर्कश आवाज में बोलता है, रंगरूप में तू काला,
मिसाल देता है तू समझदारी और परिश्रम की॥
विशेष महत्त्व है तेरा भारतीय संस्कृति में, साहित्य भी है गवाह,
पालना पसन्द नहीं करता कोई भी तुझे,
करे तू काँउ-काँउ घर की मुंडेर पर,देता है संदेश मेहमान के आने का,
तेरी कर्कश वाणी करती सबको परेशान , पर श्राद्ध के दिनों में लोग बड़े सम्मान से बुलाते तुझे,
खिलाते खीर-पूरी तुझे, ना आने पर तेरा करते घंटों इन्तजार,
खुद शनि भगवान सवारी करते तुझ पर॥
तेरी सूझ बूझ के तो क्या कहने,
क्या बैलेंस बना कर उतरता है तू ढलान से, बड़े-बड़े धुरंधर रह जाते पीछे,
और तो और.....
दूसरी प्रजातियों से पहले तू झगड़ा मोल लेता,
फिर समझोते के बहाने अपने ही प्रतिद्वंदियों के घर चोरी,
राजनेताओं, ठगों को भी छोड़ दिया तूने पीछे,
क्या रणनीति है तेरी,वाह !!
अपनों के दर्द का अहसास है तुझे, कोसों दूर बैठे सुन लेता उनके कराहने की आवाज़,
पहुँच जाता उनकी मदद के लिए,
सुलझा सकता है तू समस्याओं को अपनी तर्क शक्ति से,
परिंदों की दुनिया में तेरे आई-क्यू का क्या कहना,
है तू परिंदों का शंहशाह॥

पापा मेरे पापा

शब्द नही मेरे पास बयां करने को पापा आपके लिए,
सारी खुशियाँ मिल सके मुझे , इसी कोशिश मे लगे रहते हो आप,
देख कर विश्वास मुझ पर, करीब पाती हूँ मैं मंजिल अपनी,

शब्द नही मेरे पास बयां करने को पापा आप के लिए,
उंगली पकड़ कर सिखलाया चलना, हर क़दम पर दिया साथ मेरा,
आंसू भी मोती बन जाते मेरे,जब होते आप मेरे साथ।

शब्द नही मेरे पास बयां करने को पापा आप केलिए,
सिखाये मायने संघर्ष और सफलताओं के,
बताया अंतर शिष्टाचार, मानवता और नैतिकता में।

शब्द नही मेरे पास बयां करने को पापा आप के लिए,
बिन बोले ही समझ जाते आप मेरी परेशानियाँ को,
डगमगा जाए कदम तो थाम लेते हो मेरा हाथ।

शब्द नही मेरे पास बयां करने को पापा आप केलिए,
माँ है ताकत मेरी, आप हो गुरूर मेरा,
अभिभान है आपकी दी हुई परवरिशपर।

शब्द नही मेरे पास बयां करने को पापा आप केलिए,
शौहरत हैअधूरीआपके बिना,
मैं तो हूँ डाल उस वृक्ष की जिसको सींचा आपने अपने खून-पसीने से।

पापा मेरे पापा॥

बंसत की वह पहली भोर

बंसत की वह पहली भोर,पक्षियों के मधुर स्वर का कर्ण गोचर होना,
मिट्टी की भीनी-भीनी सुंगध, पीले फूलों का आगमन,
पर मन क्यों था मेरा व्याकुल ?
नज़र गई उस अप्सरा पर, प्रज्वलित- नीले नयन जिसके, तीखी नाकऔरगोल-मटोल चेहरा,
सूखा रही थी अपने आजानुलंबित केश-राशि,चेहरे पर पानी की बूंदों का टपकना,
पर मन क्यों था उसका भी व्याकुल ?
जा पहुँची मैं उसके पास, दोनों सवार थे एक ही कश्ती पर,
कमर तोड़ महँगाई, बढ़ती बेरोजगारी,पारिवारिक बोझ,
स्पर्धाओं की होड़, आंतकवाद के आक्रोश और रीति-रिवाज़ों से,
पूरा अक़वाम है बेबस, कर रहे है किसान आत्महत्या,
निराश्रित महसूस कर रहे नौजवान,
मन था हम दोनों का व्याकुल ?
अकस्मात ही दरवाज़े पर हुई दस्तक,
खड़े थे वहाँ साक्षात नारदमुनि बोले, "चलोकर आए हम सैर वैकुंठ की"
गुंज रहा था वैकुंठ वीणा की सुराली धुनों से,
पर यह क्या यमराज के चेहरे पर भी यह चिन्ता, किसे भेजे स्वर्ग और किसे भेजे नरकमें,
चित्रगुप्त पन्ने पलटते- पलटते थक गए, नहीं ढूंढ पा रहे थे गलतियाँ हम खुदगर्जों,
धर्मराज परेशान थे बढ़ते हुए भ्रष्ट्राचार से, राजनैतिक लोगों से, ठेकेदारों से, भूखमरी से और रिश्वतखोरों से,
मन था उन सबका भी व्याकुल ?
ढूंढ रहे थे वेजवाब कि कैसेसमझाए इन भूलोक वासियोंको,
सहसा आँख खुली और टूटा स्वप्न, किया वादा बंसत की उस सुहावनी प्रभात से
नहीं हार मानेगे, करेगे समाना हर मुशिकल का।

बचपन

बचपन के वे लम्हे याद आते है बहुत, काश थाम पाती उन लम्हों को
कागज़ की कश्ती का आंखों से औझल होना,कर देता हम सबको बैचेन,
घंटो बारिश में खेलना, समुद्र की लहरों में घंटों नंगे पैर चलना |
बचपन के वे लम्हे याद आते है बहुत,
दोस्तों संग करना चुहलबाज़ी, आमों को चुरा कर खा जाना,
माली को सताना, पकड़े जाने पर मासूम बनना |
बचपन के वे लम्हे याद आते है बहुत,
माँ की स्नेहभिसिक्त लोरियाँ, दादा -दादी की कहानियाँ,
पापा के कंधे की सवारी,आटे की बोरी बनकर पूरा जग घूम आना|
बचपन के वे लम्हे याद आते है बहुत,
भाई-बहन से प्यार भरी नोंक-झोंक,
मीठी-मीठी बातें करके हर ज़िद पूरी करवा लेना |
बचपन के वे लम्हे याद आते है बहुत,
ना था गिला-शिकवा किसी से,ना हौ था भेदभाव किसी धर्म के लिए,
बिना मतलब हंसना, बेकरारी से रहना थे कोसों दूर ।
बचपन के वे लम्हे याद आते है बहुत,
झोपड़ी भी लगती महलों जैसी,
सूखी रोटी में भी था अमृत- रस|
बचपन के वे लम्हे याद आते है बहुत,
बनाकर घर मिट्टी के सजाये हज़ारों सपने,
जाने कहाँ खो गये वो दिन
काश बन तितली उड़ पाती उन लम्हों के साथ,
काश कोई वापिस दिला दे हमें हमारे बचपन के वे लम्हे,
बचपन के वे लम्हे याद आते है बहुत, काश थाम पाती उन लम्हों को,

बस यही चाह है मेरी!!!

धीरे – धीरे उड़ गगन में, बन तितली मैं भी उड़ूँ तेरे संग,
कही बीत गई ये चाँदनी रात तो टूट ना जाए सपना,
बन तितली मैं भी उड़ूँ तेरे संग,

तेरे साथ पहुँचा दूँ उसे उस मुकाम पर, जो सपने संजोए बैठा है .अरसों से,
रख सकूँ हर किसी को खुश, तमन्ना है यही मेरी,
बन तितली मैं भी उड़ूँ तेरे संग,

दिल मैं कुछ , जुबाँ पर कुछ, चाह यही है जो दिल में हो वही बोल दूँ,
ले आऊँ सुख चैन अमन में, उठा सकूँ आवाज हो रहे जुल्मों के खिलाफ,
बन तितली मैं भी उड़ूँ तेरे संग,

कर पाऊँ पर्दापाश पांखडी बाबाओं का,करते जो भक्ति के नाम पर सौदा,
मिलवा दूँ दो प्यार करने वालों को,
बन तितली मैं भी उड़ूँ तेरे संग,

समझा सकूँ जीवन की अहमियत को, खत्म कर पाऊँ धर्म-अधर्म के बीच की लड़ाई,
बस यही चाह है मेरी सबके चेहरे पर आ जाए मुस्कुराहट॥

बे ज़ुबान परिंदे

चिडियों का चहचहाना, कुंहू - कुंहू करती कोयल और मुरगे की बांग,
लाते है संदेश प्रभात की पेहली किरण का।
तेरी मीठी बातें छू जाती दिलों को ,
'ए 'नादान परिंदे मत बोल इतना मीठा,
खो गई यह सुरीली आवाज़े, मनुष्य निर्मित मशीनों में,
निर्दयी इन्सान ले रहा तुझे अपने शिकंजे में ,
अपने स्वार्थ में भूल रहा है इन्सनियत को।

आहट हुई द्वार पर नज़र गई बाहर, फिर एक परिंदा आया गिरफ्त में,
एक और गौरये ने दी जान, क्या कसूर था उसका,
क्यों ले रहा इन बेज़ुबान परिंदों की जान ?
उठाया जब उसे अपनी गोद में, उसकी नम आँखे बोल पड़ी,
हम तो पंछी है उनमुक्त गगन के,
अपनी उड़ानो में लेकर घूमते तुम सबके सपने,
नीला गगन भी हो रहा बेरंग,
तिनका- तिनका जोड़कर बनाया था आशियाना,
हैं हम सभी प्राणियों में सबसे अधिक सुन्दर एवं आकर्षित,
लुप्त हो रही हमारी प्रजातियाँ।
प्रकृति तो देती सबको जीने का हक, हे प्राणी! हमें भी जीने दे,
क्यों ले रहा हम बेज़ुबान परिंदों की जान ?

मत समझ हमें कमज़ोर

किस तरह का विकार उपज रहा है मनुष्यों में,
क्या यही है कलयुग, जहाँ इंसान के भेष में ले रहा जन्म जानवर,
बढ़ रहा है अधर्म हो रहा विनाश धरती का,
रह जाएगे सिर्फ मलेच्छ धरती पर।।
कभी दिल्ली तो कभी केरल और तिनसुकिया,
अपरहण , बलात्कर फिर नृशंश हत्या फिर मिलती है उनकी लाशें,
घूमते है आरोपी खुले आम होक रगिरफ्तार भी,नहीं डर किसी का उन असुरों को,
मिलनी चाहिए सज़ा जघन्य घटना के गुनाहगारों को और अबला को इंसाफ,
बिक चुकी है मानवता दलालों के हाथ, शर्मसार हो रही है मानवीयता,
है बहुत दुखद और विकट स्थिति, समाज का हो चुका अधोपतन।।
डरता है आज एक पिता, सोचता है क्यों लाया बिटिया को इस निर्दयी दुनिया में,
खून खोलता है उसका, नहीं सूखते है माँ के आँसू,
संस्कार तो दिए थे उन्होनें अपने लाडलों कोमानवीय मूल्यों के,
अपना अस्तित्व और इज्जत बचाने के लिए करनी होगी बेहतर संवेदनहीन व्यवस्था,
कब तक बर्दाश्त करोगे इस घिनोने अत्याचार को, दरगुज़र मत कर उनके पापों को ।।
शान है नारी नर की, जननी है वह,
है उसकी गरिमा गौरवपूर्ण, देश की प्रगति अधूरी उस बिन,
पहचान ले उस अधिष्ठात्री को वक्त के रहते,
मत कर गलती उसे कमज़ोर समझने की।।

माँ , तुम्हीं तो हो

माँ , तुम्हीं तो हो नींव परिवार की
तुम्हारे बिना अधूरी है , जिंदगी सभी की।
माँ , साधारण – सा वाक्य भी अधूरा बिना क्रिया के
मैं भी असहाय हूँ , बिना तेरे आँचल के।

माँ , तुम्हीं तो हो, जो अपने दामन में समा लेती है, मुसीबतों के सैलाब
छू भी नहीं पाते है , मुझको वे सैलाब।
माँ ,खेतों में बीज फूटते है, खिल जाती है क्यारियाँ
पर मुझे तो मिलता सुकून जब सुनाती तुम लोरियाँ।

माँ , तुम्हीं तो हो, जिसने नाजाने कितनी रातें काटी ,बिना पलक झपकाए
नहीं उतार सकते तेरा क़र्ज ,क्यो डरते है ? सब करने से तेरी सेवा।
माँ, ख्वाब देखा, हिमालयऔर सागर बोले,
“मुझ में समाजा छूलेगा ऊँचाईयों को।”
फिर तुझे देखा माँ तुमने कहा,
“धैर्य रख, मत भाग झूठी दुनिया के पीछे ,छूलेगा ऊँचाईयों को।”
माँ, तुम्हें क्या कहकर पुकारू,
संस्कारो की देवी
लोरियों की रानी
मंत्रों की खुशबू
माँ , तुम्हीं तो हो,मेरी पहचान, माँ, तुम्हीं तो हो,मेरी ताकत

मैं हूँ कलम

कहाँ से आएथेमेरे पूर्वज, हूँ मैंउससे अनजान
मैंतो हुईपैदाजंगलोंमें,परवरिशहुईझाडियोंमें,
पहचान बनीकलम से मेरी, वर्णमाला कीशुरुवात हुई मुझसे।
अंग्रेजआएनामहोगयामेरापेंसिल,
कोशिश की बहुत अपने रंगरूप में ढलाने की,
परनहीं भूली मैं अपनी संस्कृति और सभ्यता को।
करदेतेहोतुममुझे मेरेधड़सेअलग,
छील-छीलकरकरतेहोमुझपरअन्याय,
सिरकेबलगिरकरभीसहतीहूँसारेजुल्मोंको, परसाथनछोड़ातुम्हारा,
करतीहूँदिलसे प्यार तुम्हें, तभीतोसहलेतीहूँसारेकष्ट।
मुझसेहीलिखकरतुमचढ़ेकामयाबीकीसीढ़ी,
बनेतुमअध्यापक,लेखक, डॉक्टर, मंत्री,
क्योंकररहेहोअपनेपेशेकागलतइस्तेमाल ?
कागजपरमुझसेलिखकरकरताहैतूसौदेबाजी,
क्योंभूलजाताहैतूअपनीपहचान,
अगरबैठगएहमसत्याग्रहकेआंदोलनपरतोकागज,रबड़
सबमोड़लेगेमुँहतुझसे,
तेरीपरछाईभीनादेगीतेरासाथ।
हरकोईहोजाताहैमंत्रमुग्धमेरीबाहरी सुंदरतापर,
पर है तीक्ष्ण बुद्धि का रहस्य मेरी आंतरिक सौंदर्य,
लिख देता हूँ स्वर्ण अक्षरों मे सबका भविष्य, पहचानो
मेरीताकतको॥

<u>मैं हूँ साधारण-सा किसान</u>

बसता हैभारत मेरे हृदय में,
भारत है कृषि प्रधान देश,रहता हूँ मैं उसी देश में, भाईयों !!
संघर्षऔरजोखिमसेभरा हैमेराजीवन ,
खेत-खलिहान में जुटे रहता हूँ दिन-रात,
पेट भर पाता हूँ कठिनाई से अपनोंका,पर तुझे देता भरपूर,
निर्भर हो मुझपर पर कहने से क्योंडरते हो ?
सहता हूँ कभी अतिवृष्टि तो कभी अनावृष्टि की मार,
प्रताड़ित करते है अपने ही, दोष देते है प्राकृतिक आपदाओं को॥
लिपटा हुआ हूँ बेबसी से,
आश्रित हूँ पूंजीपतियों पर,
दबाहुआहूँ कर्ज के जाल में,
अंधकारमेंहैभविष्य मेरेबच्चोंका,
साहूकाररहेशोषणहमारा,
आत्महत्याकररहेमेरेभाई-बहन॥
झेलरहासारेजुल्मोंकोचुपचाप, आखिरकबतक ?
अबऔरनहीसहेगेअत्याचार,
समझनाहोगातुम्हेंश्रमकामूल्य,लौटनाहोगाश्रमिककोउसकाहक,
अभिमान है मुझेकिसानहोने का॥

मौसम को दोहरी मार

कही सूखे का सितम,तोकही बाढ़ का प्रहार,
कुदरत ने दी मौसम को दोहरी मार,यह कैसी विडंमनाखेल रही प्रकृति,
संपूर्ण वसुंधरा पर मंडरा है खतरा, बढ़ता तापमान मिटा रहा है उसका अस्तित्व,

हरियाली है प्रकृति काश्रृंगार, क्यों खेल रहा तू इससे ?
लहराती थी जहाँ कभी फसलें खेतोंमें,बनतेजा रहेवेअब बंजर,
कहाँगई पक्षियों की वे सुरीली आवाजें,दबती जा रही
हैबुनियादीसुख-सुविधाओं के बोझ तले,
सूख गएकुँए, नदियाँ, तालाब और झरने
,तड़परहाहैइन्सानपानीकीएक- एक बूँदकेलिए,
सूखे के सितमने तो वन संप्रदा को भी ले लिया आग की लपटों में,

कही सूखे का सितम,तोकही बाढ़ का प्रहार,
कुदरत ने दी मौसम को दोहरी मार,यह कैसी विडंमनाखेल रही प्रकृति,
संपूर्ण वसुंधरा पर मंडरा है खतरा,तो कही विलीन हो रही है संपूर्ण पृथ्वी सागर में,

पर्वतों की ऊँची श्रखलाएं सुंदरता है उसकी बर्फबारी,
नही बक्शा हिमालय को कुदरत ने अपने प्रहार से,
पिघल रहे है ग्लेशियर, तबाही मचा रहे पृथ्वी पर,
फैल रही है महामारी, हो रहा अंत इस धरा का,
दे रहे है बढ़ावा गैर परपंरागत ऊर्जा स्त्रोतों को, अंधे बनकर कर रहे है नष्ट सृष्टि को,

है सभी अचंभित क्या यही है कलयुग का संकेत,
वक्त है, बचा लो अपनी पावन भूमि को इस दोहरी मार से ॥

लाड्डो (नीरजा)

खूब लड़ी मरदानी, वह थी झाँसी वाली रानी,
पर तू तो है, उन हज़ारों माँओं की लाड्डो रानी ।
डटी रही तू उस रणभूमि में, बिना किसी स्वार्थ के,
कम ना हुआ लाड्डो तेरा साहस ,रखी लाज तूने माँ की कोख की।
आंतकवाद के चुंगल में तिमिर हो रहा है सारा जग,
वक्त आने पर हो जाते सब दूर , फिर क्यों करते है झूठे वादे इस जग से ?
निर्दयी इन्सान ! पूछ उन मृतवत्साओं के क्षीण कंठो से,
हृदय काँप उठता है उनका, जब दिलों के टुकड़े ओझल होते उनसे।
बहुत रोका था तुझको लाड्डो, मत जा बाहर इस बागिया से
पर तू तो ना रूकी माँ की अश्रु -राशियों से।
पुकार रही थी तुझे तो, धरती माँ अपनी कोख में,
कोई तो बताए उन्हें, कौन है देश भक्त और कौन है देश द्रोही?

सावन की पहली बूंद

कुंज-वीथियों, उपवनों मे चारों ओर था सन्नाटा,
उदासीन थे समस्त तरुण गण से लेकर खेत – खाहिलन तक,
राह देख रहे थे सावन की पहली बूंद की,

प्यासी थी धरती माँ,
बिलख रहे थे मोती भी समुद्र में,
राह देख रहे थे सावन की पहली बूंद की,

सूख चुका था मेरे उपवन का सरोवर,
आँसू थे उन नन्ही कलियों की आँखों में,
राह देख रही थी वे भी सावन की पहली बूंद की,

आई सावन की पहली बूँद,
प्रफुल्लित हो उठी कलियाँ,
आगमन हुआ लाल पुष्पों का,

आई सावन की पहली बूँद,
सपने संजोने लगी मैं,
मन आंनद से नाच उठा मेरा,

समर्पित करूँगी राजा कोलाल पुष्प,
लूँगी मुह माँगी कीमत,
सौगात है यही सावन की पहली बूँद की ,

पूछने लगी तितली हज़ारों सवाल मुझसे,
क्यों लगा रहा है बोली ? यही तोलाए खुशियाँ,
जलज सरोवर खिल उठते,तरु दल नाच उठते इनसे,

सावन की वे पहली बूँदें भी बोल उठी,
मत लगा इनकी बोली, खुद प्रभु आए द्वार तेरे,
अर्पित कर पुष्पों को उनके चरणों मे,

वट-वृक्ष के सघन कुंजों से पंछी भी बोल उठे,
पवन की लहरे भी बोल उठी,
यही तो यह सच्ची सौगात है सावन की पहली बूँद की ,

है वह वीर

हँस-हँस कर सहता हर ज़ख़्म,
जान हथेली पर रख देश की बनाए रखता आन-बान,है वह वीर॥
सूख जाते है माँ के आँसू, पर फिर भी नहीं रुकता है वह,
हर हालात में देश की रक्षा में रहता तत्पर,है वह वीर॥
राहें कितनी भी मुश्किल क्यों न हो,
तपती गर्मी में रहता रेगिस्तान में,
ताकि तू चैन की नींद सो सकें, है वह वीर॥
सियाचिन वह युद्ध भूमि जहाँ साल भर रहते है रक्षा के लिए वह,
देश भक्ति, धीरज और दृढ़ता की मूरत, है वह वीर॥
अपनी माँ की कोख छोड़कर जा बैठा,
धरती माँ की कोख में, है वह वीर॥
नक्सली हो या आंतकवादी हो मार गिराता है उन्हें,
कट गये सर गम नहीं उन्हें,
झुकने न दिया उसने अपने वतन को,है वह वीर॥
कल ही तो लगी थी उसके हाथों में मेहंदी,
उजड़ गई उसकी माँग, कसम खाई उसने रखेगी मान वह उस सिंदूर का,है वह वीर॥
पत्थर को बना सकते है वह पानी,
दुश्मन भी डाल देते हथियार उनके सामने,है वह वीर॥
शत शत नमन उन वीरोंको,
क्षण भर भी नहीं खोते धीरज, विघ्नों को लगाते गले,है वह वीर॥
'भारत माता की जय'